50

बात करामात

2 फरवरी 2001 राजस्थान पत्रिका-पेज-8

आदमी बनाम आदमी

इस अमरीका से भी हम परेशान हैं। अब कह रहा है कि आदमी का क्लोन बनाएंगे। यानी आदमी जैसा हूबहू आदमी प्रयोगशाला में तैयार कर लेंगे। पहले प्रयोगशाला में डॉली नाम की भेड़ बनाई। अब सुना है कि वह डॉली मां भी बन गई। भेड, बकरी, गाय, भैंस, बन्दर, चूहा, कुत्ता, खरगोश, सुअर, गधा इत्यादि के क्लोन बनाने में हमें कोई खास दिक्कत नहीं है। आज तक हम दो गधों में अन्तर नहीं कर पाए। हमारा मानना है कि दुनिया के सारे गधे एक जैसे होते हैं। जैसे दुनिया के सारे नेता एक सरीखे होते हैं। पैसा देकर मंत्रियों से काम हिन्दुस्तान में भी करवाया जा सकता है तो इंग्लिस्तान में भी। बेचारे टोनी ब्लेयर भारतीय उद्योगपति श्रीचन्द हिन्दुजा को पासपोर्ट जारी करने के मामले में फँसे पड़े हैं। हालाँकि ये कार्य उनके एक मंत्री पीटर मेंडलसन ने करवाया था। इसी तरह दुनिया की सारी भेडें एक जैसी होती हैं जैसे लोकतान्त्रिक देशों के मतदाता एक समान होते हैं। अपने हिये पर हाथ रखकर कहिए कि क्या आप वोट देते समय प्रत्याशियों की योग्यता, ईमानदारी, भलमनसी, शिक्षा और सेवा पर तुलनात्मक विचार करते हैं। क्षमा करें, नहीं करते। भेड़चाल में वोट डाल आते हैं और बाद में भुगतते रहते हैं।

एक बात बताएं। क्या सचमुच आप चाहते हैं कि एक दम आप सरीखा आदमी इस दुनिया में हो? प्रश्न आसान नहीं है। थोड़ा विचित्र है। सोचना पडेगा। अभी तक माना जाता था कि 'बेहमाता' सभी इन्सानों को अलग-अलग रंग-रूप, स्वभाव, गुण प्रदान करती हैं। जुड़वां भाई-बहनों में चाहे लाख समानता हो लेकिन कुछ बातों में वे भी एक दूसरे से अलग होते हैं। दूसरी तरफ वैज्ञानिक एक आदमी का दूसरा प्रतिरूप तैयार करने में लगे हैं। एक बात आपको बता दें अमरीका के वैज्ञानिक तो ये कवायद ईसा के दो हजार बरस बाद कर रहे हैं, हमारे देश में ईसा से हजारों बरस पहले यह खोज हो चुकी है।

सच्ची साबजी! हम कोई तुक्का नहीं मार रहे। आपने रक्तबीज नाम के एक राक्षस की कहानी पढी है। ये दुनिया में क्लोन बनाने वाला पहला राक्षस था। कहते हैं जहां इस राक्षस के खून की बूंद गिरती थी उस जगह तुरन्त एक नया रक्तबीज जन्म ले लेता था जो अपने मूल रक्तबीज की ही तरह शक्तिशाली, घमण्डी, क्रूर और बेरहम होता था। देवी मय्या ने इस राक्षस को बड़ी मुश्किलों से मारा था। उस जमाने में अपनी खोजों को 'पेटेन्ट' कराने की विधि नहीं थी। अगर होती और रक्तबीज ने खून की एक बूंद से नया आदमी पैदा करने की विधि पेटेन्ट करा ली होती तो आज सारी दुनिया में रक्तबीज ही रक्तबीज होते।

चलिए छोड़िए, उन हजारों बरस पुरानी बातों को। आप तो आज की बात कीजिए। मान लीजिए कर्नाटक के महान् संत श्री वीरप्पन ने अपने बीस-पच्चीस क्लोन तैयार करवा लिए तो? एक वीरप्पन तो पकड़ा नहीं जा रहा उन पच्चीस वीरप्पनों को कौन पकड़ेगा? लगे हाथों अपने दाऊद भाई भी शारजाह से अपने एक दर्जन क्लोन बनवा कर इण्डिया भिजवा दें। क्या होगा जब महासदाचारी श्री सुखराम अपने दो दर्जन क्लोन बनवा लेंगे।

सुभीता भी हो जाएगा। मान लीजिए शाहरुख खान को छह निर्माताओं ने एक साथ 'साइन' कर लिया तो एक अकेला शाहरुख खान कहाँ-कहाँ शूटिंग करेगा। वह बड़ी आसानी से अपने छह क्लोन बना कर अलग-अलग लोकेशन पर भेज देगा। एक शाहरुख करिश्मा के साथ मटकेगा तो दूसरा काजोल के साथ गाना गा रहा होगा। तीसरा रवीना के साथ शयनकक्ष दृश्यों का फिल्मांकन करवा रहा होगा तो चौथा प्रीति जिन्टा के साथ टसुए बहा रहा होगा। क्लोन के थोक के भाव बनने से हमारे देश के असीमित विकास होने की सम्भावना बढ़ जाएगी।

लेकिन हम अपने दिल की बात कहें। हम नहीं चाहते कि इस दुनिया में हमारा कोई क्लोन हो। बड़ी मुश्किल हो जाएगी। इधर हम खाने-कमाने के लिए अपने काम पर जाएंगे, उधर हमारा क्लोन हमारी श्रीमतीजी को मैटिनी शो दिखलाने सिनेमा घर ले जाएगा। हम इस दुनिया में 'वन एण्ड ओनली' रहना चाहते हैं। हीरे की कद्र तब ही होती है जब वह अकेला हो। अगर इस देश में सत्रह अटल बिहारी वाजपेयी, सत्ताईस लालकृष्ण आडवाणी, छत्तीस सोनिया गांधी, बहत्तर अशोक गहलोत, एक सौ दो अमिताभ बच्चन, दो सौ दस सचिन तेंदुलकर, तीन सौ तेरह माधुरी दीक्षित और एक हजार एक जॉनी लीवर हो गए तो फिर देश के क्या हाल होंगे? मनुष्य के शरीर में लाखों कोशिकाएं होती हैं और क्लोन बनाने के लिए सिर्फ एक कोशिका काफी है।

तो साहबजी! हमारा तो यही छोटा-सा निवेदन है कि आदमी का क्लोन न बने तो ही ठीक। वरना इन्सान और भेड़ में कुछ फर्क नहीं बचेगा। यूं भी इस दुनिया में आदमी-औरत भेड़-बकरियों की तरह बढ़ते जा रहे हैं। क्लोन का प्रोडक्शन शुरू हो गया तो ईश्वर, गॉड और अल्लाह तीनों मिल कर भी कुछ नहीं कर सकेंगे।

-राही

→ 2 फरवरी 2001 राजस्थान पत्रिका पेज-8

→ 9 जनवरी 2007 राजस्थान पत्रिका पेज-4

तत्व बोध

जैन कोई जाति नहीं हो सकती। एक मुसलमान भी जैन हो सकता है, ईसाई भी जैन हो सकता है, हिन्दू भी जैन हो सकता है क्योंकि जैन कोई जाति नहीं है। आचार्य तुलसी बहुत बार कहते थे कि 'जैन धर्म' को मैं जन धर्म बनाना चाहता हूं। विनोबाजी ने एक बार बहुत सुन्दर कहा था कि 'जैन धर्म अपने दया, अहिंसा, प्रेम और मैत्री को व्यापक बनाकर दूसरों में खप जाए तो भी वह कोई हानि नहीं होगी।' यह बहुत सुन्दर और गहरी बात थी। ये विश्वजनीन और सार्वजनीन सिद्धांत तथा इन्हें देखने की अनेकान्त दृष्टि, इस सारे चक्रव्यूह को लेकर हम विचार करें तो कि महावीर का धर्म बहुत व्यापक था। यह उस समय की बात थी जब किसी से पूछा जाता हमारी मुक्ति कब होगी? तो कहा जाता- 'सए सए उवड्डाणे'- मेरे उपस्थान में आ जाओ, तुम्हारी मुक्ति हो जाएगी। पुनः प्रश्न होता कि तुम्हारे सम्प्रदाय में नहीं आए तो? उत्तर मिलता- 'सिद्धिमेव न अन्नहा'- अन्यथा तुम्हारी सिद्धि नहीं होगी। यानी मेरे सम्प्रदाय में आओ तो तुम्हारी मुक्ति होगी अन्यथा तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। मेरे कुएं का पानी पीओ तो तुम्हारी प्यास बुझेगी अन्यथा नहीं बुझेगी। मेरे घर में आओ तो तुम्हें प्रकाश मिलेगा, बाहर रहो तो नहीं मिलेगा। महावीर से पूछा गया- 'भन्ते! क्या अन्यलिंगी यानी आपके शासन को नहीं मानने वाला, उससे बाहर भी कोई साधु या संन्यासी है? क्या वह मुक्त हो सकता है?' महावीर ने कहा- हो सकता है। यदि सम्यग्-दर्शन, ज्ञान और चरित्र आए तो किसी भी शासन में रह कर वह मुक्त हो सकता है। [क्रमशः] आचार्य महाप्रज्ञ

9 जनवरी 2007, मंगलवार, राजस्थान पत्रिका-पेज-4

→ 4 सितम्बर 2006 राजस्थान पत्रिका-पेज-4

तत्व-बोध

हिन्दू नाम की कोई जाति नहीं थी। जाति के साथ हिन्दू शब्द का योग विदेशी आक्रमण की मध्यावधि में हुआ है। हिन्दुस्तानी धर्मों का समाहार वैदिक, जैन और बौद्ध- इन तीन धाराओं में होता था। उनका विस्तार सैकड़ों शाखाओं- प्रशाखाओं में हुआ। उनमें हिन्दू नाम का कोई धर्म नहीं है। धर्म के साथ हिन्दू शब्द का योग बहुत अर्वाचीन है। अब हम हिन्दू शब्द के प्रथम अर्थ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विचार करें। हिन्दुस्तान का प्राचीन नाम भारत वर्ष था। भगवान ऋषभ के पुत्र भरत के नाम से इस भूखण्ड का नाम भारतवर्ष पडा था। इसके साक्ष्य में श्रीमद्भागवत, अन्य अनेक पुराण तथा जैन साहित्य का उल्लेख किया जा सकता है। भारत वर्ष के निवासी लोगों का व्यापारिक, राजनयिक, सांस्कृतिक व धार्मिक सम्बन्ध विदेशों के साथ बहुत प्राचीनकाल से था। भारतवर्ष की सीमा पश्चिम में सिन्धु नदी, पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी, उत्तर में हिमालय की दक्षिण श्रेणी और दक्षिण में समुद्र कर रहा था। सिन्धुनद से परवर्ती पारसीक, यवन आदि देशों में रहने वाले लोग सिन्धुनद से उपलक्षित इस भूखण्ड [भारत वर्ष] को हिन्दू कहते थे। हिन्दू सिन्धु का रूपान्तर है, जो उनकी स्वदेशोच्चारण शैली में हुआ है।

[क्रमशः] आचार्य महाप्रज्ञ

4 सितम्बर 2006, सोमवार, राजस्थान पत्रिका-पेज-4

पेज-40.

See-Underlined.